B-4
L-5

ETHICS

परिणाम नैतिकता का निर्धारक →

वर्तमान समाज प्रधानतः परिणाम के आधार पर ही कर्मों को उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित करता है।

स्वार्थ → अपने लिए।

परार्थ → दूसरों के लिए।

निकृष्ट → शारीरिक सुख

उत्कृष्ट → मानसिक सुख

वाद → सिद्धांत

वादी → सिद्धांत को मानने वाला।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सुखवाद → वह परिणाम सापेक्ष नैतिक सिद्धांत है जिसके अनुसार सुख प्राप्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य है अर्थात जिस कर्म से सुख की प्राप्ति हो वह कर्म उचित है और जो इसमें बाधक है वह अनुचित है।

सुखवाद

- **स्वार्थवादी सुखवाद** ↓ अपने सुख की प्राप्ति को जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाला सिद्धांत।
  - **निकृष्ट स्वार्थवादी सुखवाद** ↓ अपने शारीरिक सुख की प्राप्ति को जीवन
  - **उत्कृष्ट स्वार्थवादी सुखवाद** ↓ अपने मानसिक सुख की प्राप्ति को जीवन
- **परार्थवादी सुखवाद** ↓ दूसरों के सुख की प्राप्ति को जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाला सिद्धांत।
  - **निकृष्ट**
  - **उत्कृष्ट**

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

का चरम लक्ष्य मानने वाला सिद्धांत।	का चरम लक्ष्य मानने वाला सिद्धांत।

उपयोगितावाद →

वह परिणाम सापेक्ष नैतिक सिद्धांत है जिसके अनुसार 'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख' ही नैतिकता का मानदण्ड है अर्थात जो कर्म इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक है वह कर्म उचित है, जो इसमें बाधक है वह अनुचित है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

बेन्थम का मत निकृष्ट उपयोगितावाद कहलाता है, जे. एस. मिल का मत उत्कृष्ट उपयोगितावाद कहलाता है।

परिणामवाद की आलोचना →

- परिणाम अच्छा होते हुए भी कर्म बुरा हो सकता है, जैसे- चोरी करके पास करना।

- परिणाम बुरा होते हुए भी कर्म अच्छा हो सकता है, जैसे- डॉक्टर के अथक प्रयास के बाद भी रोगी की मृत्यु।

- गीता के अनुसार मनुष्य का केवल कर्म पर अधिकार है, फल या परिणाम पर नहीं अतः मनुष्य को निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सुख का अर्थ →

- अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख।
- बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।
- सर्वे भवन्तु सुखिनः।
- पहला सुख निरोगी काया।
- संतोषम् परम् सुखम्।
- अच्छी जीवन शैली, आत्मिक संतुष्टि।
- पर्यावरण प्रेम।
- परोपकार।

- शांति एवं व्यवस्था।
- अंतः करण युक्त सुख।
- तात्कालिक सुख के स्थान पर दीर्घकालिक सुख।
- विवेकीय जीवन।
- सदैव मध्यम मार्ग का आचरण।
- सुशासन सुख है।

नोट- मानव के क्रियाकलापों को उचित या अनुचित के रूप में निर्धारित करते समय आप किन आधारों को स्वीकार करेंगे-

↳ कर्म का विषय
↳ कर्ता की भावना / उद्देश्य
↳ कर्म करने की परिस्थिति एवं संदर्भ
↳ कर्म का परिणाम
↳ नियम और कानून की स्थिति
↳ पीड़ित पक्ष की संतुष्टि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR